कृष्ण, कालिय नाग और पोलीसिफेली

डॉ. किशोर पंवार

कर्नाटक के कुके सुब्रमण्य नाग मंदिर में पांच सिरों वाले कोबरा के सचित्र समाचार प्रमुखता से हाल ही में प्रकाशित हुए थे। कुछ लोगों का कहना है कि यह साक्षात 'नागराज' है तो अन्य कहते हैं कि ये तो ट्रिक फोटोग्राफी का कमाल है। खैर सच जो भी होगा वह तो सामने आ ही जाएगा। परन्तु इस घटना से मुझे कृष्ण के कालिय मर्दन की कथा याद आ गई। वहीं विष्णु के साथी शेषनाग भी याद आ गए। दोनों सर्प हैं और कई सिरों वाले भी। कालिय मर्दन की कथा बड़ी मज़ेदार और रोचक है। यह कथा भागवत पुराण में दशम स्कंध के पूर्वार्ध में आती है। इसमें कई बाते हैं जो सोचने को मजबूर भी करती हैं। कभी लगता है कि केवल मिथक है, तो कभी लगता है बात में दम है। आगे बढ़ने से पहले थोड़ी कथा पढ़ लें।

यमुना नदी में एक कुंड था जिसमें कालिय नाम का एक महाविषघट भयंकर सर्प रहता था। उसके कई सिर थे। उसने अपने विष से यमुना का पानी विषैला कर दिया था। कोई पशु-पक्षी मनुष्य उसे पीता तो उसकी मृत्यु हो जाती थी। जेठ-आषाढ़ माह में एक दिन कृष्ण जब यमुना किनारे गए तो देखा विषैला पानी पी लेने से गाएं और ग्वाल-बाल मृत पड़े हैं। यह देख कृष्ण कालिय कुंड में कूद जाते हैं। जिससे सर्प नाराज़ होकर ज़ोर-ज़ोर से फुफकारने लगता है। कृष्ण उसके फनों पर सवार होकर, पैरों से उसे कुचल डालते हैं। उसे अधमरा करने के बाद कहते हैं कि तुम अब यह जगह छोड़ समुद्र स्थित रमणक द्वीप वापस चले जाओ। अब पक्षीराज गरुड़ तुम्हें परेशान नहीं करेंगे। इस तरह कृष्ण ने कालिय मर्दन किया और यमुना को विष मुक्त।

यह वर्णन पढ़ मुझे इकॉलाजी में पढ़ी भोजन श्रृंखला की वह कड़ी सचित्र नज़र आई जिसमें बाज के मुंह में उसका शिकार सर्प फंसा बताया जाता है। इसमें खाद्य श्रृंखला के शीर्ष पर बाज टॉप कार्नीवोर के रूप में हैं। घास के मैदान और जंगलों में मिलने वाली यह एक आम खाद्य श्रृंखला है, जो हरी घास से शुरू होकर कीट पंतगों और मेंढक से होती हुई सांप और बाज पर पूरी होती है। यह सर्व विदित है कि सांप और बाज का आपस में शिकार-शिकारी का सम्बंध है।

कई सिर वाले सर्प, उसका शिकारी बाज और कालिय मर्दन के इस पौराणिक संदर्भ को हम एक सिरे से नकार भी सकते हैं। परन्तु क्या यह उन लोगों के अवलोकनों को झुठलाना नहीं होगा जिन्होंने अपने जीवन काल में ऐसे बहु-सिर सर्पों और सर्पों का शिकार करते बाज को देखा होगा।

जिन लोगों का अधिकांश समय जंगलों में ही बीतता हो, ऐसे में इस बात की पूरी संभावना है कि उन्होंने दो-तीन सिर वाले विचित्र सर्प ज़रूर देखे होंगे। बहुमुखता या बहुसिरता, जिसे विज्ञान पोलीसिफेली कहता है, में कुछ सच्चाई ज़रूर है। कालिय सर्प के सौ सिर बताए गए हैं। सौ नहीं, तीन सिरों वाले सर्प के जीवाश्मीय प्रमाण उपलब्ध हैं। दो-तीन सिर वाले सर्प दुनिया भर में बहुत जगह मिले हैं। पौराणिक कल्पना में तीन के सौ तो हो ही सकते हैं। वैसे भी पौराणिक आख्यानों में विचित्रता एवं कल्पनाशीलता तथा चमत्कारी तत्व ज़्यादा ही रहते हैं।

पोलीसिफेली अर्थात बहुमुखता को चिकित्सा विज्ञान की भाषा में कॉन्जेनायटल सिफेलिक डिसऑर्डर कहते हैं। वैसे

बहुमुखी मनुष्य और पशु-पक्षी मिलना आम नहीं, बिरली घटना है। ऐसे प्राणी बहुत समय से देखे जाते रहे हैं। दोमुखी मनुष्य मिलने की घटना का जिक्र 945 ईस्वीं में भी हुआ है।

इस तरह के बहुसिरे जीवों का मिलना अक्सर समाचार पत्रों की सुर्खियां बनता है। ये चिड़ियाघरों में भी आकर्षण का केंद्र होते हैं। ऐसे अजूबे जीवों का प्रदर्शन कर पैसा भी कमाया जाता है। प्राकृतिक इतिहास के अजायबघरों में दो सिरों वाले जीवों के संरक्षित नमूने अवलोकनार्थ रखे गए हैं। इन्हें दुनिया भर में लासाने, रिप्लेज, गेटलिनबर्ग म्यूज़ियम में देखा जा सकता है। दो सिर वाला जीवित कछुआ आज भी जिनेवा के प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय में रखा हुआ है।

वैसे बहुसिरता अक्सर सांपों और कछुओं में ही ज़्यादा देखी गई है परन्तु दो सिर वाली गाय, भेड़, बकरी, सूअर, कुत्ते और मनुष्य भी यदा-कदा मिलते रहते हैं।

बहुसिरता: विज्ञान और पुराण

हम जानते हैं कि एक निषेचित अण्डे से एक ही जीव बनता है। परन्तु कभी-कभी एक ही अण्डे से एक से ज़्यादा जीव भी निकलते हैं। जब एक अण्डे से दो बच्चे बनते हैं तो उन्हें होमोज़ायगस ट्विन्स या हूबहू समान जुड़वां कहते हैं। ऐसा मनुष्यों में कई बार होता है। ऐसे जुड़वां या तो दोनों लड़के होते हैं या दोनों लड़कियां।

एक दूसरी स्थिति में भी जुड़वां बच्चे पैदा होते हैं। ऐसा तब होता है जब दो अण्डे एक साथ निषेचित हो जाएं। ऐसी स्थिति में दोनों नर या मादा हो सकते है या एक नर और एक मादा। उन्हें हिटरोज़ायगस ट्विन्स कहते हैं।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि निषेचित अण्डे का पूर्ण विभाजन नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में जो जीव जन्मते हैं वे कहीं न कहीं से आपस में जुड़े रहते हैं। या तो आगे से या शरीर के पिछले हिस्से से। जब निषेचित अण्डे का विभाजन सिर बनाने वाले हिस्से से शुरू होकर पूर्ण विभाजन नहीं होता तो दो-तीन सिर वाले जीव बनते हैं। जब ऐसा विभाजन पिछले हिस्से में हो तो दो पूंछ वाले बंदर, चार टांगों वाली मुर्गियां आदि बनते हैं। ऐसी असामान्यताएं सरीसृप यानी रेप्टाइल्स समूह में ज़्यादा पाई गई हैं। सरिसृपों में कछुए सांप आदि आते हैं। दो-तीन सिर वाले कछुए और सांप अक्सर देखे जाते हैं।

क्या यह गौरतलब नहीं है कि दुनिया भर के धर्मग्रंथों और लोक कथाओं में दो-तीन सिर से लेकर दस सिर तक के जीव जंतुओं की भरमार है? यूनान, रोम-मिस्र, जापान, चीन, स्लाविक आदि सभी सभ्यताओं की पौराणिक कथाओं में ऐसे विचित्र जीवों का भरपूर ज़िक्र आता है। उसमें यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि ऐसे बहुमुखी जीवों में सबसे ज़्यादा जीव सर्प प्रजाति के ही हैं। विज्ञान भी यही कहता है कि पोलीसिफेली रेप्टाइल्स वर्ग में ही सर्वाधिक होती है।

ऐसा नहीं है कि बहुसिरता के किस्से या पात्र भारतीय दिमाग की उपज हैं। सारी दुनिया में ऐसे पात्र हैं जो बहुमुखता या बहु-शरीरता दर्शाते हैं। रोमन मायथालॉजी में बेलौर एक ऐसा ड्रेगन है जिसके तीन, सात और बारह तक सिर हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश जैसे त्रिदेव रोमन मायथालॉजी में भी हैं - जेनस दो या चार सिर वाला देवता है। स्लाविक मायथालॉजी का ट्रिग्लैव (तीन सिर वाला) देवता हिन्दू मायथॉलॉजी के त्रिदेव से समानता रखता है। हगेंरियन लोक कथाओं के ड्रेगन तीन से सात सिरों वाले हैं। विष्णु के साथ शेषनाग भी कई सिरों वाला है।

पौराणिक ग्रंथों में बहुसिर सरीसृपों के उदाहरणों की पुष्टि विज्ञान भी करता है। अतः कालिय नाग और शेषनाग के एकाधिक सिर होना प्राकृतिक विज्ञान पर आधारित एक कल्पना है। यह दूसरी सभ्यताओं की लोककथाओं में भी नज़र आती है। थोड़ा सच, थोड़ी कल्पना यही तो है कथा-कहानी। कहानी में रोचकता न हो तो उसे अच्छी कथा नहीं कहा जा सकता। कथा में रोमांच कल्पना और यथार्थ का मिला जुला रूप ही उसकी सार्थकता और ग्रहणशीलता तय करता है। पौराणिक ग्रंथ इस कसौटी पर खरे उतरते नज़र आते हैं। पौराणिक ग्रंथों पर एक नज़र इस लिहाज से डालना भी ज़रूरी है कि उनमें प्राकृतिक इतिहास की कितनी और कैसी जानकारी मिल सकती है। वर्तमान संदर्भों में ऐसी विवेचना उपयोगी हो सकती है। संजीवनी की खोज के प्रयास इसका एक बेहतर उदाहरण है। ***(स्रोत फीचर्स)***